खेती री बातां

वर्ष–15 अंक–6 मासिक पत्रिका आर.एन.आई – 70296/98 5 जून 2012 वार्षिक शुल्क –12 रूपये

बीज रथों को हरी झण्डी दिखाकर कृषि मंत्री ने किया खरीफ अभियान का शुभारम्भ

जयपुर, 25 मई। कृषि मंत्री श्री हरजीराम बुरड़क ने कृषि अनुसंधान केन्द्र, दुर्गापुरा में जिले के **''कृषि ज्ञान एवं आदान शिविर खरीफ अभियान''** के शुभारम्भ अवसर पर 37 बीज रथों को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया।

बीज रथों के माध्यम से जिले की पंचायतों में खरीफ आदान के बीज वितरित किये जायेंगे।

कृषि मंत्री ने इस अवसर पर अपील की है कि किसान भाई इस अभियान का ज्यादा से ज्यादा संख्या में भाग लेकर लाभ उठाएं। अभियान के दौरान कृषि की नवीनतम उन्नत तकनीक व विभागीय गतिविधियों तथा योजनाओं की जानकारी दी जायेगी।

कार्यक्रम में कृषि राज्यमंत्री श्री विनोद कुमार, राजस्थान राज्य बीज निगम के अध्यक्ष श्री धर्मेन्द्र राठौड़, आयुक्त, कृषि श्री भवानी सिंह देथा, निदेशक पशुपालन डा0 राजेश मान, राज्य बीज निगम के प्रबन्ध निदेशक रमेश चन्द्र सोलंकी सहित कृषि, पशुपालन, कृषि विपणन, उद्यान विभागों के वरिष्ठ अधिकारी व कर्मचारीगण उपस्थित थे।

कृषि नीति प्रारुप में प्राप्त सुझावों को सम्मिलित किया जाएगा– डॉ.परोदा

जयपुर, 7 मई। राज्य आयोजना बोर्ड के सदस्य एवं कृषि पर गठित कार्यदल के अध्यक्ष डॉ. आर.एस. परोदा ने पंत कृषि–भवन में आयोजित बैठक की अध्यक्षता करते हुए कहा कि कृषि नीति प्रारुप के सम्बन्ध में जो भी अच्छे सुझाव आये हैं उन्हें सम्मिलित किया जायेगा। बैठक में कृषि एवं सम्बद्ध विभागों की बारहवीं पंचवर्षीय योजना, विश्व बैंक के सहयोग से क्रियान्वित की जाने वाली ''राजस्थान कृषि प्रतिस्पर्धात्मक परियोजना'' तथा राज्य कृषि नीति के प्रारुप पर विचार विमर्श किया गया।

श्री परोदा ने कहा कि राज्य में कृषि व पशुपालन क्षेत्र में विकास की विपुल संभावनाएं हैं, इस दिशा में अनुसंधान कार्यों को विशेष प्राथमिकता देनी होगी। उन्होंने कहा कि राज्य की जो भी समृद्ध फसलें हैं उनके उत्पादन की अलग से रणनीति तैयार की जाए ताकि ऐसी फसलों के उत्पादन को और अधिक बढ़ावा दिया जा सके। राज्य में बाजरा, ग्वार फसल को बढ़ावा देने के साथ–साथ मोठ, जीरा, मेहन्दी व मेथी को भी प्राथमिकता दी जानी चाहिए। अनुसंधान को आज विकास से जोड़ना बहुत जरुरी हो गया है व टेक्नोलोजी किसान व खेत तक पहुंचने से ही विकास संभव है। बैठक में कृषि विभाग के वरिष्ठ अधिकारीगण भी उपस्थित थे।

श्री धर्मेन्द्र राठौड़ ने राजस्थान राज्य बीज निगम अध्यक्ष का पदभार संभाला।

25 मई से 15 जून, 2012 तक प्रत्येक ग्राम–पंचायत स्तर पर आयोजित होने वाले

''खरीफ अभियान–2012''

में भाग लें और सरकारी योजनाओं एवं अनुदान का अधिक से अधिक लाभ उठाएं।

--------- अधिक जानकारी के लिये --------

अपने निकटतम कृषि कार्यालय में सम्पर्क करें।

किसान आयोग ने कृषि व सम्बद्ध विभागों से योजनाओं की जानकारी ली

जयपुर, 15 मई। राजस्थान किसान आयोग के अध्यक्ष श्री नारायण सिंह की अध्यक्षता में कृषि एवं सम्बद्ध विभागों के माध्यम से कृषकों के लिए क्रियान्वित की जा रही विभिन्न लाभकारी योजनाओं एवं गतिविधियों के बारे में पंत–कृषि–भवन में बैठक आयोजित की गई।

श्री सिंह ने कहा कि कृषि एवं पशुपालकों की आर्थिक स्थिति में और अधिक सुधार कैसे लाया जा सकता है, इसके लिए कृषि सम्बद्ध विभाग आयोग को अपने सुझाव दें। आयोग कृषक हित में अच्छे सुझावों को राज्य सरकार के ध्यान में लाएगा।

बैठक में अतिरिक्त मुख्य सचिव पशुपालन श्री ओ.पी.मीणा ने पशु नस्ल सुधार के साथ दुग्ध उत्पादन क्षमता बढ़ाने एवं डेयरी प्रसंस्करण के लिए वित्तीय संसाधन बढ़ाने की आवश्यकता बताई। उन्होंने डेयरी को व्यवसाय के रुप में मान्यता देने की बात भी कही।

राजस्थान भण्डारण निगम के प्रबंध निदेशक श्री सी.एम.मीणा ने राज्य में भण्डार व्यवस्था ग्राम पंचायत स्तर तक होना जरुरी बताया।

राजस्थान पशु चिकित्सा एवं पशु विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने पशुचारा उपलब्धता पर ध्यान आकर्षित कराया। उन्होंने राज्य सरकार द्वारा पशुओं के लिए निःशुल्क दवा उपलब्ध कराने की योजना की सराहना की। बैठक में आयोग के सदस्य व कृषि एवं सम्बद्ध विभागों के वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित थे।

खरीफ–2012 हेतु प्रमाणित बीजों की विक्रय दरें घोषित

राजस्थान स्टेट सीड्स कार्पोरेशन लिमिटेड ने खरीफ–2012 में सामान्य वितरण हेतु प्रमाणित बीजों की विक्रय दरें घोषित की हैं, जो निम्नानुसार हैः–

क्र.सं.	फसल	किस्म	विक्रय मूल्य (रु./क्विंटल)
1.	अरहर	पी–992	4000
		मानक	4000
2.	मूंग	एस.एम.एल.–668/आर.एम.जी.–492	6500
		आर.एम.जी.–268 / आर.एम. जी–62 / के–851 / आर.एम.जी–344	6500
3.	मोठ	आर.एम.ओ.–435 / आर.एम.ओ.–257 / आर.एम.ओ.–423 / कजरी एम.2	3500
		आर.एम.ओ.–40 / आर.एम.ओ.–225	3500
4.	उड़द	सभी किस्में (गत वर्ष की)	4500
		सभी किस्में (इस वर्ष की)	5000
5.	चँवला	सभी किस्में	3000
6.	सोयाबीन	जे.एस.–335	3800
		जे.एस.–93–05	4200
		जे.एस.–95–60	4500
7.	तिल	सभी किस्में	8500
8.	बाजरा	आई.सी.टी.पी.–8203 / सभी संकुल किस्में	2000
9.	मक्का	एच.क्यू.पी.एम.–1 / एच.क्यू.पी.एम.–5	8250
		अरावली / सभी संकुल किस्में	2100
10.	धान	पी.आर–1121	2800

बेहतर गुणवत्तायुक्त अधिक उपज के लिये अपनाइये कृषि की उन्नत तकनीक

फसल	किस्म	पकाव अवधि (दिनों में)	उपज (क्विं/है.)	बीज दर (किलो/है.)	बुवाई पूर्व उर्वरक (किलो प्रति हैक्टर) ('अ' या 'ब' में से किसी एक का उपयोग करें) 'अ' डी.ए.पी+यूरिया	'ब' एस.एस.पी.+ यूरिया	खड़ी फसल में यूरिया (किलो/है)	कतारों व पौधों के बीच दूरी (से.मी.)
बाजरा	आर.एच.बी–177	74–75	18–20	4	65+40 (जोधपुर व जयपुर खण्ड)	200+65	65	45X15
	एच.एच.बी.67–2	62–65	22–25					
	आई.सी.टी.पी.–8203	70–75	15–20					
	आर.एच.बी–121	75–78	22–25					
	आर.एच.बी– 173	78–80	30–33		65+75 (भरतपुर व गंगानगर खण्ड)	200+100	100	30 X 15 (जल्दी पकने वाली)
	आर.एच.बी– 154	72–76	23–29					
	जी.एच.बी.–538	70–75	24–26					
	एच.एच.बी–67 (इम्प्रूव्ड)	65–70	15–20					
ज्वार	एस.पी.वी–245 व 475	100–130	40–50	10	90+50	250+90	90	45 X 15
	एस.पी.वी.–96,	85–90	30–40					
	प्रताप ज्वार 1430	90–95	30–35					
	सी.एस.वी–17	85–90	25–30					
	सी.एस.एच.–13	105–110	45–55					
	सी.एस.वी.–15	105–110	25–30					
	एस.पी.वी.–837	85–90	35–40					
मक्का	माही धवल	95–100	35–45	20–25	65+75	200+100	100	60 X 25
	माही कंचन	75–80	25–30					
	पी.ई.एच.एम.–2 (फेम–2)	80–85	33–40					
	पी.ई.एच.एम.–1 (फेम–1)	80–85	28–44					
	एच.क्यू.पी.एम.–1	100–110	45–55					
	प्रताप मक्का–3	75–78	40–45					
	प्रताप मक्का–5	85–90	45–50					
	प्रताप हाईब्रिड मक्का–2	80–85	40–50					
	नवजोत	80–85	30–35					
ग्वार	आर.जी.एस 112 (सूर्या ग्वार)	85–99	10–12	15–20	80+0	250+20	–	30 X 10
	आर.जी.सी.–936, आर.जी.सी.–1002, आर.जी.सी.–1003	80–90	8–12					
	आर. जी. सी.–1017	92–99	10–14					
	आर.जी.सी.–1031 (ग्वार कांति)	110–114	11–16					
	आर.जी.सी.–1038 (ग्वार करन)	100–105	11–22					
	आर.जी.सी.–1055 (ग्वार उदय)	90–100	11–22					
	आर.जी.सी.–1066 (ग्वार लाठी)	90–100	11–16					
मूंगफली	आर.एस.वी.87, आर.जी.141	110–130	13–16	60–80 (दाना)	130+0	375+35	–	45 X 15 (फैलने वाली)
	टी. जी. 37 ए	105–110	20–25					
	जी.जी. 20	115–120	25–30					
	टी.बी.जी.39	115–120	25–30					30 X 15 (झुमका)
	एच.एन.जी.10	125–130	20–25					
	जी.जी.7	90–100	20–25	100 (दाना)				
	प्रताप मूंगफली–5	95–97	16–22					
तिल	आर.टी.351	80–85	8–10	2.5	50+0	150+25	25	30 X 15
	आर.टी.125, आर.टी.127	75–85	9–12	2.5				
	प्रताप(शाखा रहित) सी–50	110–115	4–5	4.0				
	आर.टी.346 (चेतक)	83	7–9	2.5				
मूंग	एस. एम. एल. 668	60–65	7–10	15–20	90+10	250+45	–	30 X 10
	आर.एम.जी. 268, आर.एम.जी. 344	65–70	10–12					
	एम.यू.एम.–2	60–70	14–16					
	गंगा 1, आर.एम.जी 492	70–75	15–16					
उड़द	पन्त यू–19 व आर.बी.यू 38 (बरखा)	70–80	10–12	15.00	90+10	250+45	–	30 X 10
अरहर	यू.पी.ए.एस.–120 व मानक	120–140	10–18	20 (मिलवां फसल में सात किलो)	130+0	375+45	–	45 X 30
	आई.सी.पी.एल.–151	120–140	12–20					
	आई.सी.पी.एल.–87	140–150	15–20					
	पूसा 992	150–160	14–18					60 X 30
मोठ	सी.जेड.एम.2	65–67	8–10	10–15	66+0	190+25	–	30 X 15
	आर.एम.ओ.–40, आर.एम.ओ.–257	62–65	6–9					
	आर.एम.ओ.–225, आर.एम.ओ.–435	62–65	6–8					
अरण्डी	जी.सी.एच 4	210–240	12–18	12–15	50+90	250+90	90	90 X 60 (सिंचित) 60 X 45 (असिंचित)
	जी.सी.एच 5	200–230	30–35					
	आर.सी.एच 1	210–235	32–36					
	जी.सी.एस–7	210–235	20–23					
सोयाबीन	पी.के. 472	100–115	20–25	80	90+10	250+45	–	30–35 X 10–15
	जे.एस. 335	95–100	25–30					
	जे.एस. 93–05	85–90	25–30					
	एन.आर.सी–37	90–95	25–30					
	प्रताप राज–24	95–100	25–30					

मुख्य बिन्दुः–

- बीज जनित रोगों से बचाव के लिये बीज को 4–8 ग्राम ट्राइकोडर्मा या 3 ग्राम थाइरम या 2 ग्राम कार्बेण्डेजिम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित कर बोयें।
- **मिट्टी की जांच करवाकर उर्वरक देवें।** असिंचित फसल में उर्वरक की ऊपर दी गई मात्रा की आधी मात्रा काम में लेवें।
- अनाज वाली फसलों में एजेटोबैक्टर, दलहनी फसलों, मूंगफली व सोयाबीन में राइजोबियम व सभी फसलों में पी.एस. बी.कल्चर से बीजोपचार करें।
- सिट्टा निकलते समय व दाना बनते समय यदि सूखा पड़े तो जीवन रक्षक सिंचाई देवें। फसल को खरपतवार मुक्त रखें।
- तिलहनी व दलहनी फसलों में अन्तिम जुताई के समय 250 किलोग्राम जिप्सम प्रति हैक्टर देवें।

जून माह में किए जाने वाले कृषि कार्य

फसलोत्पादन

★कातरा कीट के पतंगों को नष्ट करने के लिए प्रकाशपाश का प्रयोग करें। इसके लिए मानसून की वर्षा प्रारम्भ होते ही खेतों की मेड़ों और चारागाहों पर गैस की लालटेन या बल्ब जलायें और इनके नीचे 5 प्रतिशत मिट्टी का तेल पानी में मिलाकर किसी बड़े बर्तन में रख दें। इससे प्रकाश पर कातरा के पतंगे आकर्षित होंगे तथा नीचे मिट्टी के तेल में गिरकर मर जायेंगे।

★कातरे की छोटी अवस्था की लटें फसल में दिखाई देते ही क्यूनॉलफॉस 1.5 प्रतिशत या मिथाइल पैराथियॉन 2 प्रतिशत चूर्ण 25 किलोग्राम प्रति हैक्टर की दर से फसल पर भुरकाव करें।

★ज्वार में तना मक्खी कीट नियंत्रण के लिए मानसून की पहली वर्षा होने के एक सप्ताह के अंदर ही बुवाई करें। देर से बोई जाने वाली फसल में फोरेट 10 जी. कण या कार्बोफ्यूरॉन 3 जी. कण 15 किलोग्राम प्रति हैक्टर की दर से ऊमरों में डालकर बुवाई करें।

★मक्का में तना छेदक नियंत्रण हेतु बुवाई के 15–30 दिन में फोरेट 10 जी. कण या कार्बोफ्यूरॉन 3 जी कण 7–8 किलोग्राम प्रति हैक्टर की दर से पौधों के पोटों में डालें।

★कपास में सफेद मक्खी, ग्रे–वीविल, जैसिड, थ्रिप्स आदि के नियंत्रण के लिए कीड़े दिखाई देने पर डाईमिथोएट 30 ई.सी. 1 लीटर प्रति हैक्टर या फार्मोथियॉन 25 ई. सी. दवा 1 लीटर प्रति हैक्टर या मिथाइल डिमेटोन 25 ई.सी. दवा का 1 लीटर (400–500 लीटर पानी में) प्रति हैक्टर छिड़काव करें।

बागवानी

★बेर में कांट–छांट करें जिससे नए प्ररोह में अधिक संख्या में फूल व फल आ सकें। काटे गए स्थान पर फफूंदनाशी बोर्डेक्स मिश्रण का लेप करें।

★नींबू वर्गीय फलदार पौधों में फल गिरने की समस्या की रोकथाम हेतु प्लेनोफिक्स हारमोन का 3 मिलीलीटर प्रति 15 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

★नींबू में केंकर रोग से बचाव हेतु बोर्डो मिश्रण या स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 1 ग्राम दवा का 4–5 लीटर पानी में घोल बनाकर 20–25 दिनों के अंतर से छिड़काव करें।

सब्जियां

★कुकुरबिट्स, बैंगन व टमाटर में माइट्स की रोकथाम हेतु फॉर्मोथियान 25 ई.सी. या मिथाइल डिमेटोन 25 ई.सी. दवा 1 लीटर प्रति हैक्टर या डायकोफॉल 18.5 ई.सी. दवा 1.25 लीटर का प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करें।

★बैंगन, मिर्च व भिण्डी की खरीफ फसल की बुवाई इस माह में करें।

★वर्षा ऋतु के लिए टमाटर की अविनाश–2, रुपाली, पूसा संकर 1 व 2, कर्नाटक हाइब्रिड, सोनाली, पूसा 120, पूसा रुबी, अर्ली ड्वार्फ किस्मों का चयन करें।

★वर्षा कालीन मौसमी फूल जैसे गैन्दा, बालसम, जीनिया, सूरजमुखी, कोक्स–कॉम्ब आदि फूलों की नर्सरी तैयार करें।

पशुपालन

★पशुओं को गर्मी की तीव्रता को देखते हुए चराई के लिए सुबह 6 बजे से 11 बजे तक तथा सायं के समय 4 से 7 बजे तक भेजें।

★गर्मी के मौसम में पशुओं के लिए पर्याप्त पीने के पानी की व्यवस्था रखें।

★सूखे खेत की कम विकसित हुई ज्वार चरी न खिलायें अन्यथा पशुओं में आफरा आने व जहर फैलने का डर रहता है।

उचित मूल्य, सही गुणवत्ता के आदान प्राप्त करने एवं धोखाधड़ी से बचने के लिए बीज,उर्वरक,कीटनाशक खरीदते समय किसान भाई **पक्का बिल लेना न भूलें** विक्रेता द्वारा बिल न देने पर निकट के कृषि कार्यालय में शिकायत करें।

ऐसे मंगवायें "खेती री बातां "

घर बैठे वर्षभर **खेती री बातां** अखबार मंगवाने के लिये अपने नजदीकी कृषि कार्यालय में सम्पर्क करें या आहरण वितरण अधिकारी, कृषि आयुक्तालय कमरा नं. 250, पंत कृषि भवन, जयपुर के नाम 12/– रुपये का मनीआर्डर भेजें। स्वयं का साफ–साफ डाक का पूरा पता, पिन कोड नंबर व मोबाइल नंबर अवश्य लिखें।

डाक पं.सं. RJ/JPC/M-16/2012-14

आर.एन.आई – 70296/98

प्रेषक–
उप निदेशक कृषि (सूचना)
118, पंत कृषि भवन,
जयपुर–302005

प्रेषिति–

उर्वरक डालने से पहले कुछ विशेष बातों का ध्यान रखें

★ खरीफ फसलों में उत्पादकता बढ़ाने के लिये मृदा स्वास्थ्य कार्ड में की गई सिफारिश के अनुसार ही उर्वरकों का उपयोग करें।

★ दलहनी एवं तिलहनी फसलों में डी.ए.पी. के बजाय सिंगल सुपरफॉस्फेट का उपयोग ज्यादा लाभदायक रहता है। इसमें उपस्थित गंधक से तिलहन में तेल की मात्रा तथा दलहन में प्रोटीन की मात्रा बढ़ती है एवं दाने सुडौल बनते हैं।

★ मिट्टी में मौजूद फॉस्फोरस फसलों के बेहतर तरीके से काम आ सके इसके लिए पी.एस.बी. कल्चर तथा सड़ी हुई गोबर की खाद या कम्पोस्ट खाद का प्रयोग करना चाहिये।

★ भूमि की उर्वरा शक्ति बनाये रखने एवं संतुलित उर्वरकों का प्रयोग करने के लिये एन.पी.के. मिश्रण का प्रयोग विशेषकर खाद्यान्न व सब्जियों में ज्यादा लाभदायक रहता है।

★ छिटकवां विधि से उर्वरक देने से उर्वरक का सही उपयोग नहीं हो पाता है। अतः उर्वरक हमेशा कतारों में ऊर कर देवें ताकि जड़ों के नजदीक उर्वरक पौधे को उपलब्ध रहें। साथ ही अपने पैसे व श्रम का पूरा उपयोग हो सके एवं उपज भी अधिक मिले।

संक्रामक रोगों से पशुओं को बचायें

पशुओं को संक्रामक रोगों से बचाने हेतु समय पर नियमित टीकाकरण करायें। संक्रामक रोगों से बचाव का सर्वोत्तम उपाय समय पर टीका लगवाना ही है। रोग के प्रारंभिक लक्षण देखते ही रोगी पशु को अन्य स्वस्थ पशुओं से अलग स्थान पर रखें। रोगी पशु को दाना–चारा व पानी की व्यवस्था अलग बर्तनों में करें तथा तुरन्त पशु चिकित्सक की सलाह लें।

पशु	रोग का नाम	टीकाकरण का उपयुक्त समय
गाय व भैंस	गलघोंटू (एच.एस)	मानसून पूर्व (मई–जून)
	खुरपका–मुंहपका (एफ.एम.डी.)	अक्टूबर से दिसम्बर
	लंगड़ा बुखार (बी.क्यू.)	मानसून पूर्व
	तिल्ली बुखार (एन्थ्रेक्स)	फरवरी से अप्रेल (केवल प्रभावित क्षेत्रों में)
भेड़ व बकरी	चेचक (शीप पॉक्स)	अक्टूबर
	फड़किया(एंटेरोटॉक्सिमिया)	मार्च–अप्रैल
	खुरपका–मुंहपका (एफ.एम.डी.)	अक्टूबर

भूमि में पपड़ी की समस्या का प्रबन्धन

वर्षा की तेज बूंदों के काफी ऊंचाई से गिरने की गति से ऊर्जा उत्पन्न होती है जो मिट्टी के कणों को बिखेर देती है तथा कणों के वर्षा जल में घूमने की प्रक्रिया की वजह से बारीक कण (मृतिका) ऊपरी सतह पर जमा हो जाते हैं जिससे भूमि के सूखने पर सतह के ऊपर पतली पपड़ी बनती है। पपड़ी बनने की वजह से बीज के अंकुरण में रुकावट पैदा होती है। यह समस्या खरीफ की फसलों खास तौर पर बाजरा में अत्यधिक होती है।

इस समस्या से बचाव हेतु गोबर की सड़ी हुई खाद या मींगणी की खाद को 10 टन प्रति हैक्टर के हिसाब से बाजरे की बुवाई के तुरन्त बाद कतारों पर डाला जाता है।

यह खाद दो प्रकार से पौधों की सहायता करती है।

पहला, खाद की पतली परत वर्षा की बूंदों की त्वरित शक्ति से मृदा कणों के समूह को टूटने से बचाती है तथा मिट्टी के कणों की वर्षा जल में घुमाव की प्रक्रिया में भी अवरोध का काम करती है।

दूसरा, खाद की परत कतारों में नमी की मात्रा करीब 2.5 प्रतिशत अधिक रखती है जिससे पपड़ी बनने की प्रक्रिया में अवरोध पैदा होता है तथा पौधों का अंकुरण भी अच्छा होता है। अगर खाद की उपलब्धता बताये अनुसार न हो तब भी कम मात्रा में प्रयोग से अंकुरण में तुलनात्मक लाभ पाया गया है। विपरीत परिस्थितियों में यदि खाद, बुवाई की हुई कतारों में डालना सम्भव न हो तो वहां खाद को भूमि की सतह पर बिखेर कर मिलाने से भी पपड़ी नहीं बनती है। किन्तु यह लाभ उपरोक्त विधि के मुकाबले 20 से 25 प्रतिशत कम होता है।

परख

मई 2012 के अंक में प्रकाशित आलेख में से दो प्रश्न पूछे गये थे। सही उतर भेजने वाले कृषकों में से लॉटरी द्वारा दो विजेता कृषकों के नाम हैं–

1. **श्री शान्तिलाल चीपड़**
पो0 लाखोला, वाया– गंगापुर,
जिला भीलवाड़ा
2. **श्री मोटाराम/ बीरबलराम सोनी,**
ग्रा0 पो0 मिर्जावाली मैट,
वाया– रावतसर,
जिला–हनुमानगढ़–335524

इस माह के प्रश्न हैं –

प्र.1 गाय व भैंस में गलघोंटू (एच.एस.) का टीकाकरण कौन से महीने में करवाया जाता है?

प्र.2 नींबू वर्गीय फलदार पौधों में फलों को गिरने से रोकने के लिए किस हारमोन का प्रयोग किया जाता है?

तो आप भी उठाइये पैन व पोस्ट कार्ड और हमें लिख भेजिये इन दोनों प्रश्नों के सही जवाब इस पते पर –
उप निदेशक कृषि (सूचना),
कमरा नम्बर 118,
पंत कृषि भवन, जयपुर 302005

बीज से उत्पन्न होने वाली बीमारियों एवं कीड़ों से फसलों के बचाव के लिए बीज को सर्वप्रथम कवकनाशी, फिर कीटनाशी और अन्त में जीवाणु कल्चर से उपचारित करके बोयें।

बीजोपचार से फसलों में 10 से 15 प्रतिशत होने वाली हानि को कम किया जा सकता है।

लवणीय जल से भी हो भरपूर कमाई

शुष्क एवं अर्द्ध शुष्क क्षेत्रों में अनियमित वर्षा एवं सिंचित जल के अंधाधुंद दोहन से जल की गुणवत्ता प्रभावित हुई है। अधिक तापमान, कम वर्षा के कारण भूमि के जल में लवणों की मात्रा बढ़ती जा रही है। लवणीय जल का कृषि कार्यों के लिए निम्न प्रकार से प्रबन्धन कर अधिक उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है:–

★ सर्वप्रथम कृषक अपने खेत के कुए से पानी का नमूना लेकर नजदीकी मिट्टी परीक्षण प्रयोगशाला में लवणीयता की जांच कराए। जल के साथ मिट्टी की भी जांच करायें।

★लवणीयता प्रभावित क्षेत्रों में परीक्षण के आधार पर लवणीयता श्रेणी के अनुसार फसलों व किस्मों का चयन करें जैसे जौ, रिजका, पालक, शलजम, बैंगन, कपास सौंफ, मेहन्दी आदि फसलों एवं खजूर, अनार आदि फलों को प्राथमिकता देवें।

★सिंचाई जल के लवणीय होने की दशा में कम अन्तराल पर व हल्की सिंचाई देवें।

★विभागीय सिफारिश की गई मात्रा से 10 प्रतिशत ज्यादा फॉस्फोरस की मात्रा फसल में देवें तथा नत्रजन की आपूर्ति यूरिया से करें।

★लवणीयता प्रभावित मृदा को पड़त के रुप में रखें तथा क्यारियां बना देवें जिससे वर्षा जल के निक्षालन से मृदा के लवण पौधों की जड़ों के क्षेत्र से नीचे चले जाएं।

★अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद या वर्मी कम्पोस्ट खाद प्रति वर्ष खेत में डालें।

★वर्षा से पूर्व खेत की गहरी जुताई करें जिससे भूमि में मौजूद कड़ी परत टूट जाए।

★बीज की सामान्य से 10–15 प्रतिशत अधिक मात्रा काम में लेवें।

स्वत्वाधिकारी कृषि विभाग राजस्थान सरकार के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक आयुक्त कृषि, कृषि विभाग राजस्थान, जयपुर द्वारा कृषि सूचना मुद्रणालय जयपुर से मुद्रित और पंत कृषि भवन, जनपथ, जयपुर से प्रकाशित।

प्रकाशक – श्री भवानी सिंह देथा
सम्पादक – श्री हीरेन्द्र शर्मा
सह सम्पादक – कु. पूनम चौधरी
परामर्श – श्री के. आर. यादव
डिजाइन – श्री आर. मैसी